कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (10) खण्ड -{19}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- आत्मा भी चैतन्य है। सब संस्कार आत्मा में हैं। बाप में भी संस्कार हैं- ..... के कर्तव्य करने के ?

A- स्थापना, पालना, विनाश

B- स्थापना, विनाश, पालना

C- विनाश, स्थापना, पालना

D- पालना, स्थापना,विनाश

प्रश्न सं 2- तुम्हारी है प्रीत बुद्धि कोई की विपरीत बुद्धि हो जाती है तो जैसे कौरव बन जाते हैं। भल यहाँ आते हैं। परन्तु पद कम हो जाता है। जो कुछ जमा हुआ वो ना हो जाता है।फिर ....

A- जाकर प्रजा बन जाएंगे

B- प्रजा में जाकर कम पद पायेंगे

C- रॉयल फैमिली के भी दास दासी बनेंगे

D- साहूकारों के नौकर चाकर बनेंगे

प्रश्न सं 3- इनमें से व्यर्थ संकल्प के सम्बन्ध में कौन सा सही नहीं है?

A- व्यर्थ संकल्प बुद्धि को भी कमजोर करते हैं और स्थिति को भी कमजोर करते हैं।

B- जिनका व्यर्थ चलता है उनकी बुद्धि कमजोर होती है,कनफ्यूज्ड होती है।निर्णय ठीक नहीं होगा।

C- व्यर्थ संकल्प ही नही विकल्प की गति भी बहुत फास्ट होती है।

D- परेशानी या खुशी गायब होना, मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं।

E- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न सं 4- भूत ही दुःख देते हैं ..... का भूत आदि-मध्य-अन्त दुःख देता है। इसमें बहुत मेहनत करनी है। मासी का घर नहीं है ?

A- काम

B- क्रोध

C- मोह

D- आलस्य

प्रश्न सं 5- लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में अगर शिव की जीवन कहानी सुनायेंगे तो क्या होगा?

A- किसको जंचेगी नहीं

B- ख्याल में नहीं आयेगा।

C- अच्छी रीति बुद्धि में नहीं पड़ेगा।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- सम्पूर्ण अर्थात्.....?

A- अविनाशी

B- फरिश्ता

C- पूरा परवाना

D- कर्मातीत

प्रश्न सं 7- जिसको रचता और रचना का ज्ञान बुद्धि में है उनको क्या कहा जाता है ?

A- स्वदर्शन चक्रधारी।

B- नॉलेजफुल

C- ज्ञान का सागर

D- मास्टर सर्वशक्तिमान

प्रश्न सं 8- .....रूपी कवच को पहनकर रखो तो माया रूपी दुश्मन वार नहीं कर सकता ?

A- याद

B- बिंदु

C- योग

D- ज्ञान

प्रश्न सं 9- रावण ने तुम्हारा क्या छीन लिया ?

A- खुशी

B- सुख

C- राज्य- भाग्य

D- स्वर्ग

प्रश्न सं 10- एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है।

A- एकप्रिय

B- एकांतवासी

C- एकव्रता

D- एकानॉमी

प्रश्न सं 11- राइट हैण्डस् का यादगार है?

A- पाण्डव भवन

B- विराट रूप का चित्र

C- शक्ति स्तम्भ

D- शान्तिवन

प्रश्न सं 12- शक्तियां सदा किस नाम से प्रसिद्ध हैं?

A- विश्व कल्याणकारी

B- सदा विजयी

C- उद्धारमूर्त

D- सफलतामूर्त

प्रश्न 13- सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तियों के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या होगी?

A- प्रसन्नता

B- सन्तुष्टता

C- निर्मानता

D- हर्षितमुखता

प्रश्न 14- इनमें से कौन सा सही नहीं है?

A- गीता में भी है कि पेट से मूसल निकले।

B- यादव, कौरव, पाण्डव - तीन सेनायें।

C- यादव-कौरव लड़कर खत्म हुए।

D- कौरव-पाण्डवों की कोई लड़ाई नहीं होती।

E- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न 15- युग फिरते रहते हैं। कलियुग के बाद होता है संगमयुग, कलियुग और सतयुग के बीच का यह है....

A- कल्याणकारी धर्माऊ युग

B- पुरुषोत्तम युग

C- उत्तम ते उत्तम, मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का युग

D- उपरोक्त सभी सही

प्रश्न सं 16- अच्छी तरह पढ़ेंगे, लिखेंगे तो नवाब बनेंगे ..... तो होंगे खराब ?

A- खेलेंगे कूदेंगे।

B- नाचेंगे गायेंगें।

C- मारेंगे पीटेंगे।

D- रूलेंगें पिलेंगे।

भाग (10) खण्ड {19} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. B *स्थापना, विनाश, पालना*

परमपिता और परमात्मा शिव का विशेष कार्य स्थापना, विनाश और पालना है. यह कार्य सिर्फ़ तीन मूर्तियों के ज़रिए होता है. इससे सृष्टि का चक्र चलता है, जो कार्य और कोई नहीं कर सकता,एक बाप के तीन विशेष कार्य-कर्ता हैं जिनके ज़रिए विश्व का कार्य कराया जाता है. ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, और शंकर द्वारा विनाश होता है. वास्तव में उपरोक्त तीनों कार्य का कर्ता त्रिमूर्ति शिवबाबा हैं। जैसे सब संस्कार आत्मा में हैं। बाप में भी संस्कार हैं - *स्थापना, विनाश, पालना*

उत्तर सं 2. B *प्रजा में जाकर कम पद पायेंगे*

बाप आकर बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारी है प्रीत बुद्धि। कोई की विपरीत बुद्धि हो जाती है तो जैसे कौरव बन जाते हैं। भल यहाँ आते हैं परन्तु पद कम हो जाता है। जो कुछ जमा हुआ वो ना हो जाता है। फिर *प्रजा में जाकर कम पद पायेंगे।* इस समय देखो - पढ़ाई से क्या-क्या बन सकते हैं। बाबा कहते हैं कि - बच्चे, देवता बनना है तो इस खराब चीज़ को (विष को) छोड़ना है। एक बाप ही सच्चा सतगुरू है जो मुक्ति-जीवनमुक्ति में ले जाने वाला है।

उत्तर सं 3. C *व्यर्थ संकल्प ही नही विकल्प की गति भी बहुत फास्ट होती है।*

आप सब जानते हो कि *व्यर्थ संकल्प बुद्धि को भी कमजोर करते हैं और स्थिति को भी कमजोर करते हैं।* *जिनका व्यर्थ चलता है उनकी बुद्धि कमजोर होती है, कन्फ्युज्ड होती है। निर्णय ठीक नहीं होगा।* सदा मूंझा हुआ होगा। क्या करूँ, क्या न करूँ, स्पष्ट निर्णय नहीं होगा। और व्यर्थ संकल्प की गति बहुत फास्ट होती है। व्यर्थ संकल्प का तो सबको अनुभव होगा। विकल्प नहीं, व्यर्थ का अनुभव सभी को है। तो फास्ट गति होने के कारण उसको कन्ट्रोल नहीं कर पाते हैं। कन्ट्रोल खत्म हो जाता है। *परेशानी या खुशी गायब होना या मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना - ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं।* मुरली के आधार से A, B, D तीनों सही हैं इसलिए C गलत है।

उत्तर सं 4 A - *काम*

कोई तो सुधरते ही नहीं, कोई न कोई भूत है। लोभ का भूत, क्रोध का भूत है ना। सतयुग में कोई भूत नहीं। सतयुग में होते हैं देवतायें, जो बहुत सुखी होते हैं। *भूत ही दु:ख देते हैं, काम का भूत आदि-मध्य-अन्त दु:ख देता है। इसमें बहुत मेहनत करनी है। मासी का घर नहीं है।* बाप कहते रहते हैं भाई-बहन समझो तो क्रिमिनल दृष्टि न जाये। हर बात में हिम्मत चाहिए।

उत्तर सं 5 D - *उपरोक्त सभी*

बाप तो है ही हेविन का रचयिता तो जरूर हेविन का ही मालिक बनायेंगे। हम उनकी बायोग्राफी बताते हैं। कैसे स्वर्ग की स्थापना करते हैं, कैसे राजयोग सिखाते हैं, आकर सीखो। जैसे बाप समझाते हैं, वैसे बच्चे नहीं समझा सकते हैं क्या? इसमें बहुत अच्छा समझाने वाला चाहिए। शिव के मन्दिर में बहुत अच्छा मनाते होंगे, वहाँ जाकर समझाना चाहिए। *लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में अगर शिव की जीवन कहानी सुनायेंगे तो किसको जंचेगी नहीं। ख्याल में नहीं आयेगा। फिर उन्हों को अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना पड़े।*

उत्तर सं 6 C - *पूरा परवाना*

इन आँखों से और कुछ देखना नहीं है। आखें भी दे दी ना। पूरे परवाने हो ना। परवाने को शमा बिगर और कुछ देखने में आता है क्या? आपकी आखें और क्यों देखती? जब और कुछ देखते हैं तो धोखा देती है। अपने को धोखा न दो। इसके लिए परवानों को सिवाए शमा के और किसी को नहीं देखना है। *सम्पूर्ण अर्थात् पूरा परवाना हैं।* यह है छाप। रिजल्ट तो अच्छी है लेकिन उसको अविनाशी रखना है।

उत्तर सं 7 A - *स्वदर्शन चक्रधारी*

"पहले-पहले हम ब्राह्मण हैं, हम ब्राहमणों को रचने वाला ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा है। रचता और रचना के ज्ञान से ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। यह नॉलेज बुद्धि में कायम रखनी है। सुबह को उठकर स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठ जाना चाहिए। हमने अपने 84 जन्मों के चक्र को जान लिया है। हम सब आत्माओं का रचयिता बाप एक है। कहते भी हैं हम सब भाई-भाई हैं। हमारा बाप वह निराकार परमपिता परमात्मा है, परमधाम में रहने वाला है। हम भी वहाँ रहते थे, वह हमारा बाबा है। *रचता और रचना के ज्ञान से ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो।*

उत्तर सं 8 C - *योग रूपी कवच पहनकर रखो तो माया रूपी दुश्मन का वार नही होगा।*

❉ योग रूपी कवच आत्मा में बल भर कर आत्मा को शक्तिशाली बना देता हैं जिसके सामने माया शक्तिहीन हो जाती है और आत्मा माया रूपी दुश्मन के वार से बच जाती है ।

❉ योग रूपी कवच धारण करने से आत्मा उपराम अवस्था को प्राप्त कर अचल और अडोल स्थिति के अनुभव द्वारा सहज ही माया रूपी दुश्मन के वार से बच जाती है ।

❇ योग का बल वृति और वायुमण्डल को पॉवरफुल बना देते हैं जिसके आगे माया का फ़ोर्स स्वत: ही समाप्त हो जाता है। और माया रूपी दुश्मन डर कर भाग जाता है।

❇ योग का कवच आत्मा को गुणों और शक्तियों का अनुभवी बना देता है जिससे सर्व शक्तियां समय प्रमाण हाजिर हो कर माया रूपी दुश्मन को हरा देती हैं ।

❇ योग के बल से आत्मा सिद्धि स्वरूप बन जाती है और सिद्धि स्वरूप आत्मा माया रूपी दुश्मन के आने से पहले ही उसे पहचान कर उसके वार से स्वयं को बचा लेती है ।

उत्तर सं 9 - *राज्य-भाग्य*

बेहद का बाप आया हुआ है। कल्प-कल्प आते हैं, *माया रावण ने जो हमारा राज्य-भाग्य छीन लिया है,* वह हम आत्माओं को फिर से अपना राज्य-भाग्य बाबा आकर देते हैं। ऐसे नहीं कि कोई लड़ाई से छीना गया है। नहीं। रावण राज्य में हमारी मत भ्रष्टाचारी हो जाती है। श्रेष्ठाचारी से हम भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। दुनिया देखो कितनी बढ़ गई है, हमारा भारत देश कितना छोटा था। स्वर्ग में कितने सुखी रहेंगे। हीरे जवाहरात के महल होंगे। वहाँ रावण होता नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में खुशी होनी चाहिए,

अतीन्द्रिय सुख रहना चाहिए। बाप कहते हैं - देही-अभिमानी बनो।

उत्तर सं 10 C - *एकव्रता*

बाप के पास अखुट वरदान हैं जो जितना लेने चाहे खुला भण्डार है। ऐसे खुले भण्डार से कई बच्चे सम्पन्न बनते हैं और कोई यथा-शक्ति सम्पन्न बनते हैं। सबसे ज्यादा झोली भरकर देने में भोलानाथ वरदाता रूप ही है, सिर्फ उसको राज़ी करने की विधि को जान लो तो सर्व सिद्धियां प्राप्त हो जायेंगी। वरदाता को एक शब्द सबसे प्रिय लगता है – एकव्रता। संकल्प, स्वप्न में भी दूजा-व्रता न हो। वृत्ति में रहे मेरा तो एक दूसरा न कोई, जिसने इस राज़ को जाना, उसकी झोली वरदानों से भरपूर रहती है। *इसलिए एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है- एकव्रता*

उत्तर सं 11 B - *विराट रूप का चित्र*

बाप के आप सभी राइट हैण्ड हो। कोई को कुछ भी देना होता है तो हैण्ड द्वारा देते हैं ना! तो आप सभी बाप के राइट हैण्ड हो ना! पाण्डव राइट हैण्ड हो? *आप राइट हैण्डस का यादगार है। पता है कौन-सा यादगार है? विराट रूप का चित्र देखा है, तो

उसमें कितने हाथ दिखाते हैं? तो आप राइट हैण्ड का चित्र है ना!* कुमारियां, उसमें आप लोगों का चित्र है ना? तो अभी बाप राइट हैण्डस द्वारा आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली तो दिलायेगा ना! बिचारों को अंचली भी नहीं देंगे तो कितने तड़फेंगे! अभी सभी हद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गंवाओ।

उत्तर सं 12 A - *विश्व कल्याणकारी*

शक्तियां हो ना, साधारण तो नहीं हो या घर में जाती हो तो साधारण मातायें बन जाती हो? नहीं, सदा यह याद रहे कि हम शक्तियां है। *हद के नहीं हैं, बेहद के विश्व कल्याणकारी हैं।* शक्तियां अर्थात् असुरों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाली। शक्तियों को कहते ही हैं असुर संहारनी अर्थात् आसुरी संस्कार को संहार करने वाली। तो सभी शक्तियां ऐसी बहादुर हो?

उत्तर सं 13 B - *सन्तुष्टता*

बाप ने नम्बर नहीं बनाये हैं लेकिन अपने-अपने धारणा की यथाशक्ति ने नम्बरवार बना दिया है। *सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तियों के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या

होगी? प्राप्तियों की निशानी है सन्तुष्टता।* वो सदा सन्तुष्टमणि बन दूसरों को भी सन्तुष्टता की झलक का वायब्रेशन फैलाते रहते हैं। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित्त दिखाई देगा। प्रसन्नचित्त अर्थात् सर्व प्रश्नचित्त से न्यारा

उत्तर सं 14 E - *उपरोक्त सभी सही हैं*

अभी दु:ख के तो पहाड़ गिरने वाले हैं। किनकी दबी रहेगी धूल में....। वह भी समझते हैं कि हम जो बाम्ब्स बनाए आपस में आंख दिखाते हैं तो आखिर ख़ात्मा तो जरूर होना है। परन्तु पता नहीं कौन प्रेरक है जो ऐसी चीज़ बनवा रहे हैं। *गीता में भी है कि पेट से मूसल निकले।* यह है सारी बुद्धि की बातें। बाम्ब्स निकालते हैं अपने नेशन का विनाश करने। *यादव, कौरव, पाण्डव – तीन सेनायें हैं ना। यादव-कौरव लड़कर खत्म हुए। बाकी कौरव-पाण्डवों की कोई लड़ाई नहीं होती।* तुम्हारी कोई से युद्ध नहीं। तुम हो योगबल वाले राजऋषि। संन्यासी हैं हठयोग ऋषि।

उत्तर सं 15 D - *उपरोक्त सभी सही हैं*

ड्रामा अनुसार बाप को आना ही है। बनी बनाई बन रही.... इसमें कोई फ़र्क नहीं हो सकता। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्र

लगाती रहती है। *4 युग फिरते रहते हैं। कलियुग के बाद होता है संगमयुग, कलियुग और सतयुग के बीच का यह है कल्याणकारी धर्माऊ युग।* यह है *पुरुषोत्तम युग अर्थात् उत्तम ते उत्तम, मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का युग।* इस युग जैसा उत्तम युग कोई होता नहीं। सतयुग-त्रेता का संगमयुग कोई ऊंच नहीं है। उसमें तो दो कला सुख की कम होती हैं। इस संगमयुग की ही महिमा है। तुम जानते हो बाप तो है ऊंच ते ऊंच। ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी है।

उत्तर सं 16-D रूलेंगें पिलेंगे

अच्छी तरह पढ़ेंगे, लिखेंगे तो नवाब बनेंगे, रूलेंगे पिलेंगे तो होंगे खराब। यह तो लौकिक पढ़ाई में भी होता है।जितना जो अच्छा कर्म करते हैं वह ऊंच पद पाते हैं। ऊंच कर्मों से ही ऊंच बनते हैं। अच्छे कर्म नहीं करते हैं तो झाड़ू लगाते हैं। भरी ढोते हैं। कर्मों का फल तो कहेंगे ना। कर्मों की थ्योरी चलती है। श्रीमत से अच्छे कर्म होते हैं। कहाँ बादशाह, कहाँ दास - दासियां।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (10) खण्ड -{20}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- मीठे बच्चे - बाप का कर्तव्य है, कांटों के जंगल को खलास कर फूलों का बगीचा बनाना, इससे ही नम्बरवन ..... हो जाती है।

A- दुनिया की स्थापना

B- दैवी दुनिया की स्थापना

C- अवस्था

D- फैमिली प्लैनिंग

प्रश्न सं 2- मुक्ति जीवन-मुक्ति के सम्बन्ध में इनमें से कौनसा सही नहीं है?

A- बाप को हर एक ब्राह्मण बच्चे को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है।

B- मुक्तिधाम में मुक्ति व सतयुग में जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेंगे।

C- मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है।

D- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न सं 3- यह बहुत बड़ा इम्तहान है, जो बाप ही पढाते हैं। इसमें ..... आदि की दरकार नहीं। बाप को याद करना है, ?

A- शास्त्र

B- गीता

C- किताब

B- दुनियावी ज्ञान

प्रश्न सं 4- बाप को सब बच्चे नम्बरवार याद करते हैं लेकिन बाप किन बच्चों को याद करते हैं ?

A- जो बच्चे बहुत मीठे हैं।

B- जिन्हें सर्विस के बिना और कुछ सूझता ही नहीं।

C- जो अति प्रेम से बाप को याद करते, खुशी में प्रेम के आंसू बहाते।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 5- त्रिमूर्तिवंशी त्रिमूर्ति बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स का साक्षात्कार होता है। उन तीनों में कौन सी लाइट्स

एक नहीं हैं ?

A- नयनों की ज्योति

B- मस्तक की लाइट

C- आत्मा की लाइट

D- माथे पर लाइट का क्राउन

प्रश्न सं 6 दिलवाड़ा मन्दिर में इनमें से कौन हैं ?

A- शिव

B- आदि देव

C- हम बच्चे

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 7- अल्लाह की फीमेल कौन ?

A- बीबी

B- ब्रह्मा

C- शिव

D- मम्मा

प्रश्न सं 8- त्रिलोकीनाथ कौन है ?

A- ब्राह्मण

B- लक्ष्मी नारायण

C- शिव बाबा

D- A और C

E- A,B और C

प्रश्न सं 9- जब तुम बाप की गोद में आते हो तो यह दुनिया ही ख़त्म हो जाती है, तुम्हारा अगला जन्म नई दुनिया में होता है, इसलिये कहावत है ?

A- राम गयो रावण गयो

B- आप मुये मर गई दुनिया

C- सारी दुनिया कब्रदाखिल है

D- मिरूआ मौत मलूका शिकार

प्रश्न सं 10- अलौकिक का अर्थ है ?

A- सम्पूर्ण पवित्र

B- ब्राह्मण स्वरूप

C- इस लोक जैसे नहीं

D- सम्पूर्ण फरिश्ता

प्रश्न सं 11- सारे सृष्टि का ज्ञान किसमें है ?

A- झाड में

B- परमपिता परमात्मा में

C- सृष्टि चक्र में

D- तीनों में

प्रश्न सं 12- निर्णय करने, परखने और..... की शक्ति को धारण करना ही होलीहंस बनना है ?

A- उड़ने

B- सामना करने

C- ग्रहण करने

D- समाने

प्रश्न सं 13- बाप कहते हैं..... ऐसे कोई साधू-संन्यासी कह न सके ?

A- मुझे याद करो।

B- मेरे सिकीलधे बच्चे।

C- श्रीमत पर चलना है।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 14- इनमें से सही नहीं है ?

A- श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगें।

B- देवता सिर्फ सूर्यवंशी को कहा जाता है।

C- बाप आया है। यह ढिंठोरा पिटवाना तुम्हारा फ़र्ज है।

D- महाभारी लड़ाई भी सामने खड़ी है।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 15- बाप का भी फ़र्ज है-

A- तुम्हारी सेवा करे

B- तुम्हें राजधानी में ले जाएं

C- स्वर्ग का वर्सा दे

D- 16 कला सम्पूर्ण बनाना

*प्रश्न सं 16 *- तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जानकर बन गये हो।

A- त्रिलोकीनाथ

B- त्रिकालदर्शी

C- त्रिनेत्री

D- मास्टर भगवान

भाग (10) खण्ड {20} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1- D फैमिली प्लैनिंग

मीठे बच्चे - बाप का कर्तव्य है, कांटों के जंगल को खलास कर फूलों का बगीचा बनाना, इससे ही नम्बरवन फैमली प्लैनिंग हो जाती है'। गीता है फैमली प्लैनिंग का फर्स्टक्लास शास्त्र क्योंकि गीता द्वारा ही बाप ने अनेक अधर्म विनाश कर एक धर्म स्थापन किया। जो फैमली प्लैनिंग के मिनिस्टर होते हैं, उन्हों को समझाना चाहिए। बोलो, फैमली प्लैनिंग की ड्युटी तो गीता के कथन अनुसार एक बाप की ही है।

उत्तर सं 2- B मुक्तिधाम में मुक्ति व सतयुग में जीवन-मुक्ति का अनुभव कर सकेंगे।

हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से, लेकिन बनाना ज़रूर है। बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं। आप सबका यह चैलेन्ज है कि बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा आकर लो। लेकिन आपको तो मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा मिल गया है ना? *सतयुग में या मुक्तिधाम में मुक्ति व जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे।* मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है।

उत्तर सं 3- C किताब

यह ज्ञान की पढ़ाई का बहुत बड़ा इम्तहान है, जो बाप ही पढ़ाते हैं। इसमें *किताब* आदि की दरकार नहीं। कितनी तुम मेहनत करते हो, विश्वास नहीं करते कि भगवान् आकर इन्हों को पढ़ाते हैं। जरूर कोई में तो आयेंगे ना। तुम्हारे लिए तो सहज है, नम्बरवार तो हैं ही। स्कूल में भी नम्बरवार होते हैं। पढ़ाई में भी नम्बरवार होते हैं। इस पढ़ाई से बड़ी राजाई स्थापन हो रही है। पुरूषार्थ ऐसा करना है जो हम राजा बनते हैं।

उत्तर सं 4- D उपरोक्त सभी

सवेरे-सवेरे उठकर याद में बैठ प्यार से बाबा से मीठी-मीठी बातें करो। बाप को सब बच्चे नम्बरवार याद करते हैं लेकिन बाप उन बच्चों को याद करते हैं, जो बच्चे बहुत मीठे हैं, जिन्हें सर्विस के बिना और कुछ सूझता ही नहीं। जो अति प्रेम से बाप को याद करते, खुशी में प्रेम के आंसू बहाते। ऐसे बच्चों को बाप भी याद करते हैं। बाप की नज़र फूलों तरफ जाती है, कहेंगे फलानी आत्मा बड़ी अच्छी है, यह आत्मा जहाँ सर्विस देखती, भागती रहती है, अनेकों का कल्याण करती है। तो बाप उसे याद करते हैं।

उत्तर सं 5- C- आत्मा की लाइट

त्रिमूर्ति बाप के बच्चे स्वयं भी त्रिमूर्ति हैं। तीन प्रकार की लाइट्स साक्षात्कार की आती है? बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स का साक्षात्कार होता है। एक तो लाइट का साक्षात्कार होता है नयनों से। कहते हैं ना कि नयनों की ज्योति। नयन ऐसे दिखाई पड़ेंगे जैसे नयनों में दो बड़े बल्ब जल रहे हैं। दूसरी होती है मस्तक की लाइट। तीसरी होती हैं माथे पर लाइट का क्राउन। अभी यह कोशिश करना है जो तीनों ही लाइट्स का साक्षात्कार हो। कोई भी सामने आये तो उनको यह नयन बल्ब दिखाई पड़े।

ज्योति ही ज्योति दिखाई दें। जैसे अंधियारे में सच्चे हीरे चमकते हैं ना। इस रीति से मस्तक के लाइट्स का साक्षात्कार होगा। और माथे पर जो लाइट का क्राउन है वह तो समझते हो। ऐसे त्रिमूर्ति लाइट्स का साक्षात्कार एक-एक से होना है।

उत्तर सं 6- D - उपरोक्त सभी

यह कोई जानते नहीं कि देलवाड़ा मन्दिर हूबहू इन्हों का यादगार है। ऐसा मन्दिर कहीं नहींहै, जगदम्बा है,*शिवबाबा* भी है। शक्तियों का चबूतरा भी बना हुआ है। यह जो जैनी लोग हैं उनका यह देलवाड़ा मंदिर है। यह जो चैतन्य होकर गये हैं उनका ही जड़ यादगार है। *आदि देव* आदि देवी भी बैठे हैं। ऊपर में स्वर्ग है। अब अगर जो उन्हों के भगत हैं उन्हों को ज्ञान मिले तो अच्छी तरह समझ सकते हैं कि बरोबर नीचे राजयोग की शिक्षा ले रहे हैं। ऊपर में भी प्रवृत्ति मार्ग, नीचे भी प्रवृत्तिमार्ग। कुवारी कन्या, अधर कन्या का चित्र भी है। अधरकुमार और कुमार भी हैं। तो *मंदिर में आदि देव ब्रह्मा भी बैठा है और बच्चे भी बैठे हैं। *

उत्तर सं 7- B - *ब्रह्मा*

अल्लाह ने सृष्टि रची तो रचना के लिये उन्हें फीमेल चाहिये, गॉड फादर कहते हो तो जरूर मदर भी चाहिये ना। तुम बच्चे इस गुह्य

राज़ को अच्छी तरह से जानते हो। अल्लाह की फीमेल है यह ब्रह्मा। यह है तुम्हारी बड़ी माँ। इस बात को मनुष्य समझ नहीं सकते।

*उत्तर सं 8- D- *A और C*

आधाकल्प रामराज्य, आधाकल्प रावण राज्य, जास्ती हो नहीं सकता। तुम बच्चों की बुद्धि में अब सारी त्रिलोकी आ गई है। तुम त्रिलोकी के मालिक द्वारा नॉलेज ले रहे हो। इस समय तुम *त्रिलोकी के नाथ हो क्योंकि तुम तीनों लोकों के ज्ञान को जानते हो। बाबा त्रिलोकी का नाथ, तीनों लोकों को जानने वाला है। तुमको नॉलेज देते हैं तो हम भी मास्टर त्रिलोकीनाथ ठहरे।* जो ज्ञान बाबा में है वह अब तुम्हारे में भी है, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। फिर सतयुग में तुम विश्व के मालिक बनेंगें। लक्ष्मी-नारायण को त्रिलोकी का ज्ञान नहीं रहता है। उन्हें सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं रहता है।

उत्तर सं 9. B- आप मुये मर गई दुनिया

दुनिया नहीं मरती है, दुनिया नहीं विनाश होती है। उसी दुनिया में उनको जन्म लेना पड़ता है। अभी इस समय में तुम जब बाप की गोद में आते हो, जीते जी मरते हो, बल्कि जब मरेंगे भी

तो यह दुनिया भी मर जाएगी। आप मुए पीछे मर गई यह दुनिया। अब जब जीते जी मरते हो तो फिर जानते हो, यह सारी दुनिया खत्म होनी है। हम आते हैं बाप की गोद में, फिर हम आएँगे नई दुनिया में देवताओं के गोद में- यह तुम जानते हो। और कोई मनुष्य नहीं जानते हैं।

उत्तर सं 10. C- इस लोक जैसे नहीं

सबसे न्यारा एक ही है, और कोई हो नहीं सकता। तो आप भी कौन हैं? न्यारे और प्यारे। आपका यह न्यारा जीवन सारे विश्व को प्रिय लगता हे। इसलिए ब्राह्मण जीवन को अलौकिक जीवन कहते हैं। *अलौकिक का अर्थ क्या है? लोक जैसे नहीं।* अलौकिक अर्थात् लोक जैसा जीवन नहीं है।

उत्तर सं 11. B- परमपिता परमात्मा में

ज्ञान है ही ज्ञान सागर के पास। ज्ञान का सागर नॉलेजफुल - यह उस बाप की ही महिमा है। ज्ञान का सागर परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है, कृष्ण को नहीं कहेंगे। वह तो सतयुग का प्रिन्स है। उनमें यह आदि -मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं है। सतयुगी देवताओं में भी यह ज्ञान नहीं है। परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखला न सके।ईश्वर ही सृष्टि को रचते

हैं इसलिए उनको रचना का ज्ञान है। वह जन्म- मरण में नहीं आते, इसलिए वह सृष्टि चक्र 5000 वर्ष के ड्रामा का ज्ञान शिव बाबा ही जानते है।गाते भी हैं परमपिता परमात्मा सृष्टि का बीजरूप है।

उत्तर सं 12. C- ग्रहण करने

निर्णय करने, परखने और *ग्रहण करने* की शक्ति को धारण करना ही होलीहंस बनना है। होलीहंस अर्थात् कंकर और रत्न को अच्छी तरह परखने वाले और फिर धारण करने वाले। पहले हर आत्मा के भाव को परखने वाले और फिर धारण करने वाले। कभी भी बुद्धि में किसी भी आत्मा के प्रति अशुभ वा साधारण भाव धारण करने वाले न हो। सदा शुभ भाव और शुभ भावना धारण करना।

उत्तर सं 13. B- मेरे सिकीलधे बच्चे।

बाप कहते हैं - *“मेरे सिकीलधे बच्चे।"* ऐसे कोई साधू-संन्यासी कह न सके। तुम जानते हो बरोबर हम शिवबाबा के सिकीलधे बच्चे हैं, 5 हजार वर्ष के बाद फिर आकर मिले हैं स्वर्ग का वर्सा लेने लिये। जानते हो हम ही स्वर्ग के मालिक थे फिर

हम ही बनते हैं। स्वर्ग में जाना जरूर है। फिर पुरुषार्थ अनुसार ऊंच पद पाना है।

उत्तर 14. E- उपरोक्त सभी सही है।

श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगें। देवता सिर्फ सूर्यवंशी को कहा जाता है। बाप आया है। यह ढिंठोरा पिटवाना तुम्हारा फ़र्ज है। महाभारी लड़ाई भी सामने खड़ी है। सभी ऑप्शन बिलकुल सही हैं।

उत्तर 15. A- तुम्हारी सेवा करे

बाप को तो सगे बच्चों को मदद करनी ही है। तुम भी तन-मन-धन से सेवा करते हो। *बाप का भी फ़र्ज है तुम्हारी सेवा करे।* बाप कहते हैं - यह सब कुछ तुम बच्चों का है। भक्ति मार्ग में तुम भगवान् को देते आये हो। परन्तु ईश्वर कोई भूखा थोड़ेही है। यह तुम इनश्योर करते हो। ईश्वर को देने से ईश्वर फिर दूसरे जन्म में तुमको देंगे। यह इनश्योर करना हुआ ना। दूसरे जन्म में इसका फल मिलता है। ईश्वर है दाता। अभी तुम अपने को इनश्योर करते हो - 21 जन्म लिए। वह इनश्योर करते हैं एक जन्म के लिए।

उत्तर 16. D- मास्टर भगवान

तुम अभी जानते हो यह सारा संसार अभी स्वप्नवत् है अर्थात् सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक सब कुछ बीत चुका है तुम्हें अभी सेकेण्ड में इस स्वप्नवत् संसार की स्मृति आ गई। *तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जानकर मास्टर भगवान* बन गये हो।